गुजरात साहित्य अकादमी, गांधीनगर द्वारा आयोजित किये गये "आषाढ़स्य प्रथम दिवसे" कार्यक्रम में गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री ओ. पी. कोहली जी का संबोधन। (दिनांक : १३ जुलाई, २०१८)

- जिन लोगों ने संस्कृत भाषा तथा साहित्य को संपन्न बनाया है, उसका प्रचार-प्रसार किया है तथा उसे लोकप्रिय बनाने में योगदान दिया है ऐसे महानुभावों के अभिवादन का यह कार्यक्रम है। इन महानुभावों का समाज पर कर्ज है और इस कर्ज से मुक्त होना यह भारतीय परंपरा रही है। समाज इन महानुभावों का ऋणी है क्योंकि उन्होंने संस्कृत भाषा पर, देश पर तथा हमारी संस्कृति पर जो उपकार किया है, वह अमूल्य है।

- भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार तथा उसका संवर्धन करना यह बहुत जरूरी है। अगर हम हमारी संस्कृति का संवर्धन नहीं कर पाएंगे तो हमारी अगली पीढ़ी के लोग भारतीय संस्कृति से अपरिचित हो जाएँगे। यदि ऐसा हुआ तो हम हमारी जड़ों से कट जाएँगे। विश्व का कोई भी देश यह नहीं चाहेगा कि वह अपनी जड़ों से कट जाये। पेड़ अपनी जड़ों से जीवनरस खींचता है और वही जीवनरस उस पेड़ का अस्तित्व बन जाता है। ठीक इसी प्रकार हमारी

संस्कृति का संवर्धन करके उसे अक्षुण्ण बनाए रखना यह समाज का कर्तव्य बनता है । हमारी भारतीय संस्कृति, हमारी परंपराएं, हमारे जीवन मूल्य ये सभी संस्कृत में समाविष्ट है । हमारे भारतीय ज्ञान की परंपरा संस्कृत में ही है । इसलिए संस्कृत भाषा से हमारा जुड़ाव बना रहे तथा उत्तरोत्तर घनिष्ठ होता जाये यह चिंता हमारे समाज को करनी चाहिये।

- हम संस्कृत भाषा को कैसे बचा सकते हैं ? उदाहरण के तौर पर, हम सभी अपने रोज़बरोज के व्यवहार में अनजाने में ही कई अंग्रेजी शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग करते हैं। कुछ ऐसे शब्द जो बोलने में बहुत ही सरल है उनकी जगह पर भी हम अपने आप को अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करने से नहीं रोक पाते हैं । इसीलिए हमारी भाषा प्रदूषित हो गई है। भाषा का यह प्रदूषण केवल हिन्दी में ही नहीं अन्य प्रादेशिक भाषाओ में भी हमें देखने को मिलता है । उदाहरण के तौर पर "माता-पिता" इन शब्दो के बजाय हम "मम्मी-डैडी" शब्दो का प्रयोग करते हैं। ऐसा नहीं है कि हमें "माता-पिता" शब्दों की पहचान नहीं है फिर भी अनायास ही हमारे मुंह से "मम्मी- डैडी" शब्द निकलते हैं। इस प्रक्रिया को कैसे पलटा जाये यह हमारे

लिए एक बड़ी चुनौती हैं । संस्कृत के सभी प्रेमियों और प्रशंसकों को साथ मिलकर इस समस्या का मुकाबला करना चाहिये।

- हमारे वेदों में भी सभी प्रकार के ज्ञान का अमूल्य संग्रह हमें मिलता है । हमारे वैदिक साहित्य में धार्मिक – आध्यात्मिक ज्ञान के अलावा भी कई विषयों का ज्ञान उपलब्ध है । इस ज्ञान को योग्यरूप से संवर्धन करके आनेवाली पीढ़ियों के लिए उसे अक्षुण्ण रखना हम सभी की जिम्मेवारी है।
- स्वामी दयानंद जी ने हमें एक सूत्र दिया था कि विद्याध्ययन करना सभी हिन्दुओं का धर्म है । इस सूत्र को थोड़ा बदलकर हम कह सकते है कि संस्कृत का अध्ययन करना सभी भारतीयों का परम धर्म है। ऐसे माहौल में संस्कृत को प्रासंगिक बनाये रखना अति आवश्यक है।
- हमारे देश में कुछ ऐसी ताकतें काम कर रही है जो संस्कृत को अप्रासंगिक बनाना चाहती हैं । संस्कृत का अस्तित्व संभव ही नहीं है ऐसा प्रचार भी किया जा रहा है । संस्कृत केवल पढ़ाई का विषय न हो, मगर बोल-चाल की भी भाषा बने ऐसे प्रयत्न होने चाहिये । संस्कृत और भारतीय अस्मिता को बचाकर रखने का हमारा प्रयत्न

होना चाहिये। आज के कंप्यूटर के युग में भी संस्कृत की प्रासंगिकता बहुत है। इस दृष्टि से देखा जाये तो भी कहा जा सकता है की संस्कृत आज के जमाने की भाषा है। यह हमारी निधि है । इसे बचाये रखना हमारा परम कर्तव्य है । इस निधि को हम बचाकर नहीं रख पाएंगे तो हम हमारी संस्कृति से वंचित हो जायेंगे।

- गांधीजी ने भाषाओं के क्रम में अंग्रेजी को सबसे बाद में रखा था। उन्होंने कहा था कि बच्चों को सबसे पहले अपनी मातृ-भाषा में पढ़ना चाहिये। उसके बाद उसे अपनी अड़ोस-पड़ोस की अन्य भाषाओं का भी ज्ञान होना चाहिये। उसे राष्ट्र भाषा हिन्दी भी सीखनी चाहिये तथा इसके बाद जरूरत हो तो उसे अंग्रेजी भी सीखनी चाहिये। मगर हम देखते है कि हमने तो उल्टा क्रम बना दिया है। हमारे बच्चे सबसे पहले आज कल अंग्रेजी भाषा ही सीख रहे हैं। अब गांधीजी की १५०वीं जन्म जयंती आ रही है। ऐसे समय पर गांधीजी द्वारा बताये गये मार्ग का अनुसरण करते हुये हमें हमारे बच्चों को मातृभाषा तथा संस्कृत सिखाना चाहिये।
- मुझे प्रसन्नता है कि आज यहाँ संस्कृत के विद्वानों का, संस्कृत की सेवा करनेवालों का तथा संस्कृत का प्रचार-प्रसार

करनेवाले लोगों का सन्मान किया गया । मैं उन सभी महानुभावों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ तथा उनके दीर्घायु की कामना करता हूँ। आज के अवसर पर में इतना ही कहना चाहूँगा कि जहां तक संभव हो हमें अपनी भाषा के ही शब्दों का प्रयोग करना चाहिये और यदि हम ऐसे प्रचार करते रहेंगे तो ही भारतीय भाषाओं और संस्कृत की सेवा होगी । धन्यवाद।

स्वर्गीय श्री जिनेन्दुकुमार जैन जी, वरिष्ठ लेखक पत्रकार एवं साहित्यकार की चतुर्थ पुण्यतिथि पर उनकी स्मृति में "यंगलीडर" हिन्दी अखबार द्वारा आयोजित "पत्रकारिता की स्वतंत्रता आज के परिप्रेक्ष्य में" संगोष्ठी एवं श्रेष्ठ व्यक्तित्व के अभिनंदन समारोह में गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री ओ. पी. कोहली जी का संबोधन। (दिनांक : १५ जुलाई, २०१८)

- आज हम जिस विषय पर विचार करने के लिए यहाँ एकत्रित हुये हैं वह विषय है "आज के परिप्रेक्ष्य में पत्रकारिता की स्वतंत्रता"। हम सब जानते है कि पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा vvvv है। लोकतंत्र के प्रमुख तीन स्तंभ है। जिसे हम Legislature कहते है जिसमें लोकसभा, राज्यसभा तथा विधानसभा का समावेश होता है। दूसरा स्तंभ है प्रशासन जिससे सरकार का वहीवट चलता है। तीसरा स्तंभ है न्यायतंत्र जो कानून का पालन सही ढंग से होता है कि नहीं वो देखता है। इन स्तंभो के उपरांत हमारे यहाँ पत्रकारिता को भी चौथा स्तंभ माना गया है। हम जानते हैं जब तक उसके चारों स्तंभ मजबूत नहीं होगे तब तक कोई भी इमारत स्थिर नहीं रह पायेगी। यदि पत्रकारिता का स्तंभ कमजोर होता है तथा अपने आदर्श से फिसल जाता है तो लोकतंत्र का भवन कमजोर होकर लडखड़ाकर गिर जाता है। इसीलिए लोकतंत्र के भवन

को मजबूत बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि पत्रकारिता के स्तंभ को मजबूत बनाकर रखा जाये।

- भारत में जब अंग्रेज़ राज्य था तब अंग्रेज़ सरकार ने इस बात की कोशिश की कि पत्रकारिता पर अनेक प्रकार के अंकुश लगा दिये जाये। इसी प्रकार पत्रकारों को कोई स्वतंत्रता नहीं दी गई थी। उस समय पत्रकार उन्हीं समाचारों को छाप सकते थे जिन्हे सरकार स्वीकृति देती थी। लेकिन ये सब कुछ होते हुये भी उस समय भूगर्भ में रहकर कुछ पत्रकार अपना कर्तव्य अदा करते रहे तथा अंग्रेजों के जुल्मी शासन के विरूद्ध लोगों में राष्ट्र भक्ति की चेतना जलाए रखी। प्रेस पर अंकुश होने के बावजूद भी ऐसे पत्रकारों ने राष्ट्र की आज़ादी के संदर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। उन सभी पत्रकारों को हमारा प्रणाम है जिन्होंने प्रैस पर प्रतिबंध होने के बावजूद भी राष्ट्र भावना जगाने का काम किया। हमारे सामने ऐसे कई उदाहरण हैं। हम जानते है कि श्री लोकमान्य तिलक ने "केसरी" और "मराठा" जैसे पत्र निकालकर जन जागरण का काम किया। महर्षि श्री अरविंद तथा महात्मा गांधीजी भी इसी प्रकार के पत्रकार थे। गांधीजी ने "हरिजन" जैसा पत्र को चलाकर

सामाजिक और राष्ट्रीय एकता की ज्योत को जलाये रखने का काम किया । उन्होंने अपने समय में पत्रकारिता की ताकत को समझा तथा अपने पत्रों के माध्यम से देश निर्माण का काम किया।

- आज़ादी के बाद भी हमारे यहाँ emergency का एक काला युग आया। इस आपातकालीन स्थिति में भी पत्रकारिता पर अंकुश और बंधन लगाये गये तथा पत्रकारों को अपनी बात जनता के सामने रखने से रोका गया । ऐसे समय में भी कई पत्रकार ऐसे आये जो स्वयं स्वतंत्रता के सेनानी थे और इन्होंने निडर होकर अपने व्यवसाय की पवित्रता को समझकर जन चेतना को जगाने का काम किया। उसी शृंखला में आज भी हम आदरणीय श्री जिनेन्द्रकुमार जैन जी को श्रद्धापूर्वक याद करते हैं।
- पत्रकारिता के दो प्रकार होते हैं। जिनमें से एक है सकारात्मक पत्रकारिता और दूसरी है नकारात्मक पत्रकारिता । सकारात्मक पत्रकारिता वह होती है जो लोगों के दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाती है तथा नकारात्मक पत्रकारिता वह है जो सभी समाचारों को तथा घटनाओं को नकारात्मक नजरिए से पेश करती है। आज के माहौल में हमें सकारात्मक

पत्रकारिता की जरूरत है, जो सरकार की जनकल्याण की योजनाओं को तथा सरकार की नीतियों को लोगों के समक्ष सकारात्मक नजरिये से पेश करने के काम में जुटी रहे। इस दृष्टि से देखा जाये तो पत्रकारिता सरकार तथा जनता के बीच एक सेतु का काम करती है । सकारात्मक पत्रकारिता मात्र सरकार की जनहित की योजनाओं की जानकारी प्रजा के समक्ष नहीं पहुंचाती है बल्कि जनता के दु:ख दर्द क्या हैं तथा जनता सरकार से क्या चाहती है यह बात भी सरकार के सामने लाती है। इस संदर्भ में सकारात्मक पत्रकारिता को बहुत ही सावधानीपूर्वक अपना कर्तव्य निभाना पड़ता है।

- सकारात्मक पत्रकारिता सामाजिक चेतना को जगाने का एक बहुत ही शक्तिशाली माध्यम है।
- अभी हमने एक वक्ता को सुना जिन्होंने कहा कि पत्रकारिता व्यवसाय नहीं है बल्कि एक मिशन है । व्यवसाय और मिशन में अंतर होता है । व्यवसाय में व्यक्ति अपने लाभ का विचार करता है । इस व्यवसाय से मुझे क्या लाभ होगा, क्या फायदा होगा यह दृष्टि एक व्यवसायी की दृष्टि है । मिशन इससे भिन्न है। मिशन में एक ऊंचे उद्देश्य को सामने

रखकर काम करना होता है । इस दृष्टि से हम विचार करें तो हमें कहना होगा कि पत्रकारिता मात्र व्यवसाय नहीं है वह एक मिशन भी है । यह एक ऐसा मिशन है जो लोकतंत्र की जड़ें मजबूत बनाने का काम करता है । कष्टों को झेलते हुये भी सत्य और न्याय का मार्ग नहीं छोड़ा हो ऐसे कई पत्रकारों के उदाहरण हमारे सामने है । ऐसे पत्रकारों को हमें वंदन करना चाहिये तथा उनकी निर्भयता, संवेदनशीलता तथा बहादुरी को नमन करना चाहिये । अगर आदर्श पत्रकार में संवेदनशीलता नहीं है तो वह आदर्श पत्रकार कहलाने को योग्य नहीं है ।

- एक बार काका कालेलकर ने गांधीजी से पूछा था कि बापु आप को किस चीज से दु:ख होता है या पीड़ा होती है । पूज्य गांधीजी ने उन्हें उत्तर दिया था कि काका जब मैं पढे-लिखे तथा शिक्षित लोगों में संवेदना का अभाव देखता हूँ तब मुझे पीड़ा होती है । हमारे सभी पत्रकार भी शिक्षित वर्ग की श्रेणी में आते हैं । इसीलिए गांधीजी ने जो अपेक्षा शिक्षित लोगों से रखी थी वैसी अपेक्षा हमें पत्रकारों से भी रखनी चाहिये । सच्चा पत्रकार संवेदनशील होना चाहिये

क्योंकि एक संवेदनशील पत्रकार ही समाज के कमज़ोर लोगों के साथ भावनात्मकरूप से जुड़ पाता है।

- हमें पत्रकारों से यह अपेक्षा रखनी चाहिये कि वे समाज में जो कुछ भी अच्छा हो रहा है, positive हो रहा है उसकी जानकारी हमें दें। पत्रकार के लिये यह भी आवश्यक है कि वे अपनी मर्यादा स्वयं तय करें। उसका कर्तव्य क्या है इसे सरकार बताये तथा censorship बताये इसके बजाय पत्रकार स्वयं अपनी मर्यादा समझकर अपना काम करता रहे। यह जरूरी है आज हम जिनको श्रद्धांजलि देने के लिए यहाँ एकत्रित हुये हैं ऐसे स्वर्गस्थ श्री जिनेन्द्रकुमार जैन जी ने हमारे सामने सकारात्मक पत्रकारिता का एक आदर्श प्रस्तुत किया था। हम यह ऐसे अपेक्षा करते हैं कि आदर्श पत्रकारिता की इसी परंपरा को उनका परिवार निरंतर आगे बढ़ाता रहे। आज के अवसर पर स्वर्गस्थ श्री जिनेन्द्रकुमार जैन को प्रणाम करते हुये, मैं अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ।

इण्डियन रेडक्रोस सोसायटी, गुजरात राज्य शाखा द्वारा आयोजित सेन्चुरिअन ब्लड डोनर्स सम्मान समारोह में गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री ओ. पी. कोहली जी का संबोधन। (दिनांक : ९ अगस्त, २०१८)

- आज राज भवन में १०० से अधिक बार रक्तदान करनेवाले सेन्चुरिअन रक्तदाताओं का सन्मान किया गया। आप सभी ने इस कार्यक्रम में आकर हमारे राज भवन का गौरव बढ़ाया है आज आप सभी के आने से राज भवन सही अर्थ में लोक भवन बन चुका है। हमारे यहाँ इस प्रकार के कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित किये जाते हैं, इससे राज भवन का गौरव बढ़ता है।

- राज भवन ने गुजरात इण्डियन रेडक्रोस सोसायटी के संयुक्त तत्वावधान में आज के कार्यक्रम का आयोजन किया है। मैं इण्डियन रेडक्रोस सोसायटी के सभी पदाधिकारियों को भी बहुत बहुत धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इस मूल्यवान कार्यक्रम का आयोजन किया।

- में देख रहा हूँ कि पिछले कुछ वर्षो से गुजरात की इण्डियन रेडक्रोस सोसायटी का पर्फोरमेंस उत्तरोत्तर बढ़िया होता जा रहा है। इन अच्छे प्रयासों के लिए इस सोसायटी के सभी

पदाधिकारी प्रशंसा तथा साधुवाद के पात्र है।

- गुजरात की इण्डियन रेडक्रोस सोसायटी अपने सामाजिक दायित्व का बखूबी से निर्वहन कर रही है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में कई कार्यक्रम तथा कई प्रकार की गतिविधियां रेडक्रोस के द्वारा संचालित होती है । स्वैच्छिक रक्तदान, चक्षुदान, देहदान, थेलेसीमिया रोकथाम, सिकलसेल एनेमिया रोकथाम, ऐइड्ज, टीकाकरण, मलेरिया नियंत्रण कार्यक्रम, प्राथमिक चिकित्सा, एम्ब्युलेन्स सेवा, आपत्ति प्रबंधन प्रशिक्षण इत्यादि कई प्रवृत्तियां रेडक्रोस की निगरानी में चलती है।

- आप सभी रक्तदाताओंने १०० से अधिक बार अपने रक्त का दान किया है । रक्तदान करना कोई साधारण सेवा करना नहीं है । यह सबसे श्रेष्ठ प्रकार की सेवा है क्योंकि इसके द्वारा दूसरों को जीवन मिलता है । अभी हमें बताया गया कि गुजरात में शिशु मृत्युदर और मातृ मृत्यु दर में दिन ब दिन कमी हो रही है । ऐसी स्थिति में महिलाओं को रक्त की बहुत बड़ी आवश्यकता होती है। आपने रक्तदान करके समाज की एक बहुत बड़ी सेवा की है।

- हमारे देश में धर्म की बड़ा महिमा है । बड़े बड़े दिग्गज पंडितो ने धर्म की व्याख्या की है। मेरे मत्तानुसार धर्म शब्द की यदि कोई सरल व्याख्या हो सकती है तो वह यह है कि हम दूसरों को सुख दे । हिन्दी साहित्य में एक पंक्ति है "सुख देवत सुख होत है, दु:ख देवत दु:ख होत" अर्थात् किसी को सुख देने से हमें सुख मिलता है तथा किसी को दु:ख देने से हमें दु:ख होता है । धर्म की इससे अच्छी सरल व्याख्या कोई हो नहीं सकती। आपने रक्तदान के द्वारा कई लोगों को सुख दिया है यह अपने आप में बहुत बड़ी बात है। आप सभी ने सेवा धर्म अपनाकर अपने जीवन को सार्थक बनाया है, ऐसे महानुभावों को मेरा बहुत-बहुत प्रणाम है।

गुजरात के शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित "श्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार-2018" वितरण समारोह में गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री ओ. पी. कोहली जी का संबोधन। (दिनांक : ९ सितंबर, २०१८)

- अभी आपने दो प्रेरक प्रवचन सुने। एक हमारे शिक्षामंत्री जी का और एक हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी का। इस अवसर पर जो बातें कही जानी चाहिये थीं वे सभी बातें इन महानुभावों ने आपके सामने रखी हैं। मैं उन बातों को नहीं दोहराऊँगा। दो-तीन मोटी-मोटी बातें मेरे ध्यान में हैं जो मैं आपके सामने रखूँगा। मगर सबसे पहले मैं उन शिक्षक भाईयों और बहनों को बहुत-बहुत बधाई देना चाहूँगा जिन्हें आज यहाँ सम्मानित किया गया तथा पुरस्कृत किया गया।
- आप सभी जानते हैं कि आज का दिन हमारे पूर्व राष्ट्रपतिजी डॉ. राधाकृष्णन जी का जन्मदिन है। हम डॉ. राधाकृष्णन जी का स्मरण एक शिक्षक, दार्शनिक, विद्वान और चिंतक के रूप में करते हैं। आज के दिन हम उनके गुणों को याद कर के अच्छे शिक्षक बनने का संकल्प करें यहीं इस शिक्षक दिन की बड़ी उपलब्धि होगी।
- आप जानते है कि हमारी परंपरामें गुरु का बहुत महत्व है

जिन्हें हम ईश्वर से भी बढ़कर मानते है। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि कबीर ने कहा था कि मेरे सामने यदि गुरु और ईश्वर में से किसी एक को चुनने का विकल्प हो तो मैं गुरु को चुनूँगा क्योंकि गुरु ही मुझे ईश्वर तक ले जायेंगे। हमारे यहाँ गुरु का इतना बड़ा महत्व है क्योंकि वह अपने विद्यार्थी को सिर्फ पढ़ाता नहीं है मगर ज्ञान भी देता है। साथ-साथ में हमें यह भी याद आता है कि शिक्षक का काम सिर्फ अक्षरज्ञान देना नहीं है। इससे भी आगे चलकर शिक्षक की भूमिका कुछ और है। हमारी संस्कृति में ऐसे कई उदाहरण है जहां गुरु ने छात्र का व्यक्तित्व ही बदल दिया है। गुरु वशिष्ठ और भगवान श्री रामचन्द्र के गुरु शिष्य के संबंध के बारे में हम जानते हैं। समर्थ गुरु रामदास तथा उनके प्रिय शिष्य शिवाजी के बारे में भी हम जानते हैं। रामकृष्ण परमहंस तथा स्वामी विवेकानंद जी के बारे में भी हम जानते हैं। इन उदाहरणों को ध्यान में रखकर हम सभी को यह विचार करना है कि क्या हमारा काम सिर्फ सुनिश्चित अभ्यासक्रम को पढ़ाकर विद्यार्थी को परीक्षा के लिए तैयार करवाना है या इससे आगे जाकर इनके व्यक्तित्व को भी बदलना है। इस दृष्टि से देखें तो शिक्षक के सिर पर बहुत बड़ी जिम्मेवारी है कि उसे विद्यार्थियों

के चरित्र का निर्माण करने का अवसर मिला है । शिक्षक के व्यवसाय का सबसे महत्वपूर्ण गौरवशाली पहलू यदि कोई है तो यह है।

- देश को आजाद हुये ७० वर्ष हो रहे हैं। हम अक्सर कहते है कि समाज के निर्माण में शिक्षित व्यक्ति की बहुत बड़ी भूमिका है । इन ७० सालो में हमने काफी क्षेत्रो में प्रगति की है। फिर भी हमें बहुत आगे जाना है और एक नये भारत का निर्माण करना है । नये भारत का निर्माण Human Resource Development करने से किया जा सकता है। अब आप सब जानते है कि Human Resources का विकास कारखानो में तो नहीं किया जा सकता । इसे तो हमारे शिक्षा संस्थानों में, स्कूलों में, कॉलेजों में, विश्वविद्यालयों में करना है और ये आप सभी शिक्षक बंधुओ की जिम्मेवारी है। मुझे खुशी है कि आप सभी इस श्रेष्ठ कार्य में लगे हुये हैं।
- आदर्श शिक्षक एक शिल्पकार भी होता है और शिल्पकार का संवेदनशील होना बहुत जरूरी है । उदाहरण के तौर पर आप मूर्तिकार को लीजिये । एक मूर्तिकार अपने हाथो में हथौड़ा और छैनी लेकर धीरे-धीरे पत्थर को तराशता है और उसके परिश्रम के बाद पत्थर में से मूर्ति

का आकार बनता है। अगर मूर्तिकार आंखे बंद करके असंवेदनशील होकर हथौड़ा मार दे तो पत्थर के दो टुकड़े हो सकते है, पर मूर्ति नहीं बनेंगी। पत्थर में से एक अच्छी मूर्ति बनाने के लिए मूर्तिकार को बहुत सावधानी से संवेदनशील होकर अपना काम करना पड़ता है। इसी दृष्टि से देखे तो कुंभार मिट्टी से घड़ा तैयार करता है लेकिन घड़ा बनाने की प्रक्रिया में वह एक हाथ घड़े के अंदर डालता है तथा दूसरे हाथ से घड़े को धीरे-धीरे थपथपाता है। बड़ी ही नाजुकी से कुंभार घड़े का सर्जन करता है। इसी प्रकार से आप शिक्षको को यह बात ध्यान रखनी होती है कि आपके पास जो विद्यार्थी पढ़ने को आते है वह तो रॉ-मैटीरियल है। आपका काम इस रॉ-मैटीरियल को आकार देना है। मगर यह काम आप सफलतापूर्वक तभी कर सकेंगे जब आपके भीतर संवेदना होगी । इसीलिए आदर्श शिक्षक का केवल ज्ञानी होना पर्याप्त नहीं है, उसे साथ-साथ में संवेदनशील होना भी जरूरी है। मैं मानता हूँ कि आज जिन शिक्षकों को यहाँ पुरस्कृत किया गया ये सब सिर्फ अक्षरज्ञान देनेवाले शिक्षक नहीं होंगे बल्कि अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण करनेवाले संवेदनशील शिक्षक भी होंगे।

- एक और बात का जिक्र करके मैं अपना वक्तव्य समाप्त करूंगा। हमारे विद्यार्थीयों में सामाजिक सरोकार होना चाहिये। समाज के लिए उनके मन में चिंता होनी चाहिये तथा समाज के पीड़ित वर्गो के लिये उनके मन में सहानुभूति होनी चाहिये। एक बार महात्मा गांधीजी को काका कालेलकर ने पूछा कि बापू आपको सबसे अधिक पीड़ा किस बात से होती है तो गांधीजी ने कहा था कि शिक्षित लोगों में करुणा की भावना को सूखता हुआ देखकर मुझे बहुत पीड़ा होती है। गांधीजी के लिये उन दिनों ये चिंता की बात थी। आज की परिस्थिति भी लगभग वैसी ही है। करुणा की भावना सूखने का मतलब है कि इस समाज के लोगों से हमारा कोई वास्ता नहीं है। हम समाज की पीड़ा से, दूसरों के दु:ख से जुडते नहीं हैं। अगर हमारे शिक्षित व्यक्ति समाज के साथ जुड़ेंगे नहीं, उनमें करुणा की भावना नहीं होगी संवेदना ही सूख जाएगी तो ऐसी शिक्षा का क्या मतलब ? इसीलिए शिक्षकों का एक कर्तव्य यह भी है कि वे अपने छात्रों में सामाजिक सरोकार जगाने का काम करे क्योंकि इसके बिना शिक्षा अधूरी रहेगी।
- हमारे यहाँ शिक्षा पूरी करके गुरुकुल को छोड़ कर जब छात्र

बाहर की दुनिया के लिये जाता है तब आचार्य इसे कहते हैं कि कर्म करो। अब कर्म दो प्रकार के होते हैं। आचरणीय कर्म और अनाचारणीय कर्म। कुछ कर्म ऐसे होते हैं जिनका आचरण जरूरी है और कुछ कर्म वैसे कर्म हैं जिनका आचरण नहीं करना चाहिये। अब जब आचार्य ने शिष्यों को पढ़ाकर शिक्षित कर के गुरुकुल के बाहर भेजा है तो उसे हर कदम पर यह तय करना होगा कि जो काम करने वो जा रहा है वो अच्छा है, आचरणीय है या बुरा है और आचरणीय नहीं है। अच्छा काम और खराब काम, आचरणीय और अनाचारणीय काम इसे तय करने के लिये व्यक्ति को अपने विवेक का उपयोग करना चाहिए। आप अच्छे विद्यार्थियों को तैयार करके उनको विवेक भी सिखाते है इसीलिए आप सभी बधाई के पात्र हैं।

हमारे राज्य में गुजरात सरकार की तरफ से शिक्षा के क्षेत्र में दो महत्व के प्रयास अभियान के रूप में किए जा रहे है। प्रवेशोत्सव और गुणोत्सव। इन दोनों प्रयासों के द्वारा शिक्षा का विस्तार करना और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाना यह दो काम सरकार बखूबी से कर रही है और इन कामों में आप सभी शिक्षक भाई बहनों की बड़ी

भूमिका रही है। आप सभी के सहयोग से हमारे राज्य में शिक्षा के स्तर में सुधार आयेगा ऐसा में मानता हूँ।

- अंत में, पुरस्कार पाने वाले सभी शिक्षक भाइयों-बहनों को बहुत-बहुत बधाई देकर उनका अभिनंदन करके मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

जय हिन्द।

मानव कल्याण ट्रस्ट, नवसारी द्वारा आयोजित "महेश कोठारी दिव्यांग गौरव सम्मान पर्व" में गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री ओ. पी. कोहली जी का संबोधन। (दिनांक : २२ सितंबर, २०१८)

- आज का यह कार्यक्रम राजभवन में हो रहा है और इसके लिये राजभवन आयोजकों का आभारी है। आज यहाँ कुछ दिव्यांग भाई-बहनों का अभिनंदन किया गया तथा उसके साथ-साथ दिव्यांगजनों के कल्याण के काम में लगे हुये कुछ महानुभावों का सन्मान भी किया गया। इस दृष्टि से आज का कार्यक्रम बहुत ही महत्व का कार्यक्रम है।
- केवल दृष्टिहीन होने से ही कोई व्यक्ति अक्षम तथा असमर्थ नहीं हो जाता। यदि उसके पास दृष्टि नहीं है तो भी उसकी अन्य क्षमताएं उभरकर आ जाती हैं। हम जानते हैं कि ऐसे बहुत से काम है जो दृष्टियुक्त लोग नहीं पर पाते हैं मगर द्रष्टिहीन लोग ऐसे अद्भुत काम कर दिखाते है। इसका अर्थ यह है कि ईश्वर अगर एक तरफ से क्षति करता है तो दूसरी और उस क्षति की पूर्ति भी करता है और कुछ विशेष सामर्थ्य भी देता है। वास्तव मे विश्व में दृष्टिहीन लोगों का योगदान क्या रहा है तथा देश-विदेश के दृष्टिहीन लोगों ने जो योगदान दिया है इसका संकलन

करके एक पुस्तक प्रकाशित होनी चाहिये जिससे विश्व के लोग दृष्टि से वंचित लोगों के योगदान, सामर्थ्य तथा क्षमता से परिचित हो पायें।

- सौराष्ट्र क्षेत्र के श्री प्रफुल व्यासजी को में नमस्कार करता हूँ जिन्होंने अपना सारा जीवन दिव्यांगजनों के कल्याण में लगाया है । आज उनकी षष्ठीपूर्ति का अवसर है । मैं भगवान से यह प्रार्थना करता हूँ कि भगवान उन्हें दीर्घायु करे तथा उनकी कार्यक्षमता उत्तरोत्तर बढ़ती रहे तथा इसमें कभी भी कोई कमी न आये।
- आज के अवसर पर तीन राज्य स्तरीय पुरस्कार प्रदान किए गये। जिन्हें यह पुरस्कार प्रदान किए गये वे सब अद्भुत क्षमतावाले लोग हैं। स्वर्गस्थ भीखाभाई शाह मेमोरियल एवोर्ड, श्री शशीभाई और श्री खिमजीभाई पटेल को दिया गया। श्री भूपेन्द्र त्रिपाठी और सुधा पटेल को स्वर्गस्थ पद्मश्री डॉ. जगदीश पटेल प्रज्ञाचक्षु प्रतिभा पारितोषिक से सन्मान किया गया । उसी प्रकार आरोहित परिभार तथा क्षतिगता क्षित को स्वर्गस्थ मुकुंदभाई गांधी स्त्री शक्ति एवोर्ड से सन्मानित किया गया। इन सभी को मेरा नमस्कार है और मेरी ईश्वर से यह प्रार्थना है कि

इनकी क्षमताओं में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहे।

- इन भाईयों बहनों को शुभकामनाएं देने के साथ-साथ उनके परिवारजनों को भी में शुभकामनाएं देता हूँ क्योंकि इसके बिना बात अधूरी रहेगी। परिवार में यदि एक व्यक्ति दृष्टिविहीन है तो सारा परिवार मिलकर इससे प्रभावित होकर उस व्यक्ति को सहाय करने में प्रयत्नशील रहता है। इसीलिए इन सभी सन्मानित भाईयों बहनों के परिवारजनों को भी इस अवसर पर स्मरण करने की आवश्यकता है। साथ में मेरा यह अनुरोध है की हम दृष्टिहिन व्यक्तियों के प्रति अपने मन में सच्ची संवेदना रखें तथा उन्हें हम सन्मान से देखें।
- हम सभी के लिये यह जरूरी है कि हमारे जो भी भाई बहन दृष्टिविहीन है उनके साथ हम हमेशा आत्मीयता का संबंध रखें तथा उन्हें यह अनुभूति न होने दे के वे दृष्टिविहीन है। साथ-साथ ईश्वर के द्वारा इन्हें जो क्षति दी गई है उस क्षति को हम मानवीय प्रयासों से पूरा करने का प्रयास करते रहें।
- मैंने कई कार्यक्रमों में श्री भास्करजी को बोलते हुये सुना है। उनके कर्त्तुत्व से तथा उनकी योग्यता से मैं बहुत प्रभावित हूँ। प्रो. भास्कर मेहता स्वयं दृष्टिहिन होते हुये भी

दृष्टिविहीन भाई-बहनों के अधिकारों के लिये, उनके कल्याण के लिये और प्रगति के लिये निरंतर प्रयत्नशील रहते हैं । प्रो. भास्कर मेहता एक रोल मॉडल है जिनका अनुकरण करना चाहिये। उनकी कर्मठता, कार्यक्षमता तथा कार्यशीलता हम सभी को प्रेरणा देती है तथा प्रेरणा देती रहेगी।

- मैंने एक कार्यक्रम में किसी संत महात्मा से यह बात सुनी थी "सुख देकर सुख होत है , दु:ख देकर दु:ख होत" । यह बात अपने आपमें छोटी है मगर यह बात अगर हमारे आचरण का विषय बन जाती है तो हम स्वयं तो बदलेंगे ही मगर दूसरों को भी हम बदल सकेंगे।

- आज के इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी श्रोताओं को मैं बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ । इतने गरिमामय कार्यक्रम का राज भवन में आयोजन करने के लिये में आयोजकों का आभारी हूँ। में ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि हमारे सभी दृष्टिविहीन भाईयों और बहनों की क्षमता वह उत्तरोत्तर बढ़ाता रहे तथा उनके साथ सहयोग करने तथा उनकी सेवा करने के अवसर हमें भी देता रहे। धन्यवाद।